Toppersnotes

Unleash the topper in you

UPSC

Prelims

संघ लोक सेवा आयोग

भाग – 4

भारतीय अर्थव्यवस्था

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	अर्थव्यवस्था की मूलभूत अवधारणाएँ	1
2	राष्ट्रीय आय की गणना	6
3	मुद्रा और मुद्रा आपूर्ति	12
4	भारत में बैंकिंग प्रणाली	17
5	मौद्रिक नीति	35
6	मुद्रास्फीति	41
7	सरकारी बजटीकरण	46
8	राजकोषीय नीति और कराधान	50
9	वित्तीय बाजार	61
10	भुगतान संतुलन	72
11	विदेशी निवेश	82
12	गरीबी	87
13	भारत में कृषि	97
14	उद्योग और अवसंरचना	116
15	सेवा क्षेत्र	133
16	अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान	141
17	अन्य महत्वपूर्ण विषय	151

1 CHAPTER अर्थव्यवस्था की मूलभूत अवधारणाएँ

अर्थशास्त्र सामाजिक विज्ञान का एक विषय है, जिसमें वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, वितरण और उपभोग की अवधारणाओं का अध्ययन किया जाता है।

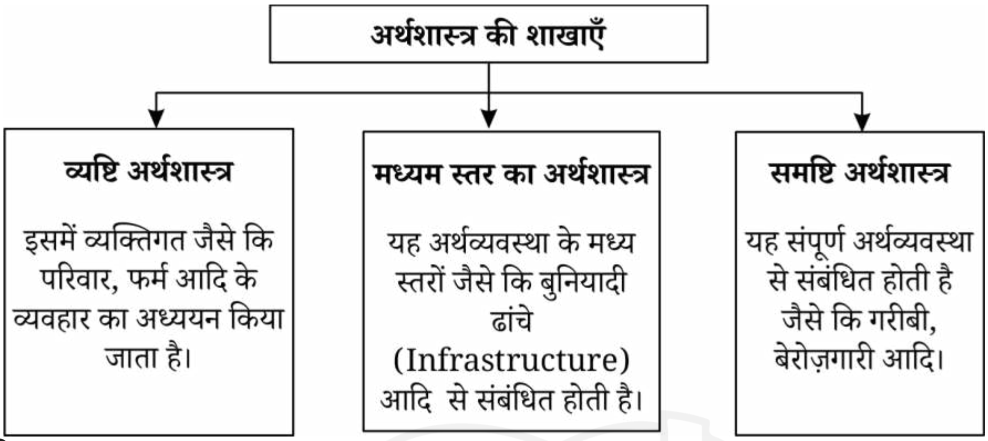

अर्थव्यवस्था के प्रकार

- **पूंजीवादी अर्थव्यवस्था:** यह न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप के साथ 'अहस्तक्षेप के सिद्धांत (लैसेज फेयर)' पर आधारित अर्थव्यवस्था होती है। निजी उद्यम, बाजार - मांग के आधार पर उत्पादन, मूल्य निर्धारण और आपूर्ति तय करते है और कीमतें, आपूर्ति और मांग जैसी बाजार शक्तियों द्वारा निर्धारित की जाती हैं।
- **समाजवादी अर्थव्यवस्था:** इसमें सरकार उत्पादन और मूल्य निर्धारण को नियंत्रित करती है तथा वहनीयता (क्रय शक्ति) के बजाय आवश्यकता के आधार पर वस्तुओं का वितरण करती है। साथ ही स्वास्थ्य सेवा जैसी आवश्यक सेवाएँ नागरिकों को निःशुल्क भी प्रदान की जाती हैं।
- **मिश्रित अर्थव्यवस्था:** इसमें पूंजीवाद और समाजवाद दोनों के तत्व शामिल होते है। सरकार सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हस्तक्षेप करती है और करों के माध्यम से धन का पुनर्वितरण सुनिश्चित करती है। साथ ही निजी क्षेत्र की गतिविधियों के साथ-साथ सामाजिक उद्देश्यों को भी बढ़ावा देती है।
- **खुली अर्थव्यवस्था:** इसमें देश की अर्थव्यवस्था अन्य देशों की अर्थव्यवस्था से संबद्ध होती है। घरेलू वस्तुओं की मांग में घरेलू खपत, निवेश, सरकारी खर्च और आयात एवं निर्यात शामिल होते हैं। निर्यात, घरेलू वस्तुओं और सेवाओं के लिए अतिरिक्त मांग प्रदान करता है।
- **बंद अर्थव्यवस्था**: इसमें अन्य देशों के साथ कोई आर्थिक संबंध नहीं होता है। बंद अर्थव्यवस्था में बचत, निवेश, सकल घरेलू उत्पाद (GDP) और सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP) बराबर होते हैं, जबकि खुली अर्थव्यवस्था में ये अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण भिन्न हो सकते।

आर्थिक विचारधाराएँ

- **शास्त्रीय दृष्टिकोण:** यह दृष्टिकोण संसाधनों के आवंटन के लिए मुक्त बाज़ार को सबसे कुशल तरीका मानता है और सीमित सरकारी भागीदारी की वकालत करता है, जो केवल निष्पक्ष और सख्त रेफरी के रूप में कार्य करती है।
- **कीनेसियन दृष्टिकोण:** यह तर्क देता है, कि अकेले बाज़ार, संसाधनों का कुशलतापूर्वक आवंटन नहीं कर सकता हैं और यह संसाधनों को पुनः आवंटित करने और अर्थव्यवस्था को स्थिर करने के लिए सक्रिय सरकारी हस्तक्षेप का समर्थन करता है।

अर्थव्यवस्था का संरचनात्मक वर्गीकरण

- **प्राथमिक क्षेत्र:** यह प्राकृतिक संसाधनों के सीधे उपयोग या कच्चे माल के उत्पादन में शामिल गतिविधियों को संदर्भित करता है। उदाहरणों में मछली पकड़ना, खेती, खनन आदि शामिल हैं।
- **द्वितीयक क्षेत्र:** यह उपयोग योग्य या तैयार वस्तुओं के निर्माण में शामिल उद्योगों को शामिल करता है। उदाहरणों में भारी उद्योग जैसे कि इस्पात, मोटर वाहन और हल्के उद्योग जैसे कि खाद्य और सौंदर्य प्रसाधन आदि शामिल हैं।
- **तृतीयक क्षेत्र:** यह क्षेत्र उन गतिविधियों को संदर्भित करता है, जो व्यवसायों या अंतिम उपभोक्ताओं को सेवाएँ प्रदान करते हैं। उदाहरणों में स्वास्थ्य सेवा, बीमा आदि शामिल हैं।
- **चतुर्थक क्षेत्र:** इसमें ज्ञान आधारित सेवाओं को शामिल किया जाता हैं। उदाहरणों में अनुसंधान, विकास, शिक्षा आदि शामिल हैं।
- **पंचम क्षेत्र:** यह अर्थव्यवस्था में उच्चतम स्तर के निर्णय निर्माण को शामिल करता है।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र

- **औपचारिक क्षेत्र:** इस क्षेत्र में वे व्यवसाय शामिल हैं, जो आधिकारिक तौर पर सरकार के साथ पंजीकृत हैं और विभिन्न विनियमों, जैसे कि कंपनी अधिनियम, कारखाना अधिनियम और श्रम कानून आदि द्वारा शासित हैं।
- **अनौपचारिक क्षेत्र:** इस क्षेत्र में वे व्यवसाय शामिल हैं, जो कानूनी विनियमन या नियमित वित्तीय लेखाजोखा के बिना संचालित होते हैं। उदाहरणों में भूमिहीन मजदूर, किसान और विक्रेता आदि शामिल हैं।

अर्थव्यवस्था का रियल सेक्टर या वास्तविक क्षेत्रक आर्थिक उत्पादन और सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि को संचालित करता है। इसमें कृषि या कपड़ा उत्पादन जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं, जो सीधे अर्थव्यवस्था की उत्पादकता में योगदान देती हैं और कुल मांग को पूरा करती हैं। यह आर्थिक स्थिरता के लिए आवश्यक है। इसके विपरीत, वित्तीय क्षेत्र में बैंक, बीमा कंपनियाँ और निवेश फ़र्म जैसी वित्तीय सेवाएँ प्रदान करने वाली संस्थाएँ शामिल हैं, जो ऋण आदि के माध्यम से राजस्व सृजन जैसे कार्य करती हैं।

वस्तुएँ और इनके प्रकार

वस्तुएँ ऐसे उत्पाद या सेवाएँ हैं, जो लोगों की आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा करती हैं। वे भौतिक स्वरूप , सेवाओं के रूप में या दोनों का मिश्रण हो सकती हैं और जिस किसी का भी कुछ निश्चित मूल्य होता है, उसे वस्तु माना जा सकता है। इनका वर्गीकरण इस प्रकार कर सकते है:

- **मध्यवर्ती वस्तुएँ:** ये उत्पादन प्रक्रिया में उत्पादकों द्वारा कच्चे माल या सहायक सामग्री के रूप में उपयोग की जाने वाली वस्तुएँ होती है। उदाहरण: टायरों के लिए रबर ।
- **अंतिम वस्तुएँ:** ये अंतिम उपभोग के लिए तैयार वस्तुएँ होती है, जिनमें आगे किसी प्रसंस्करण या उत्पादन की आवश्यकता नहीं होती है। उदाहरण: साइकिल ।
- **उपभोक्ता वस्तुएँ:** उपभोक्ताओं द्वारा व्यक्तिगत उपयोग के लिए खरीदी गई वस्तुएँ उपभोक्ता वस्तुएँ कहलाती है। उदाहरण: चीनी।
- **पूंजीगत वस्तुएँ:** ये उत्पादन प्रक्रिया में उपयोग की जाने वाली टिकाऊ वस्तुएँ होती है। जैसे मशीनरी और उपकरण।
- **विलासिता की वस्तुएँ:** वे उत्पाद जिनकी माँग आय बढ़ने के साथ बढ़ती है, विलासिता या लग्ज़री गुड्स कहलाती है। उदाहरण: सोना।
- **पूरक वस्तुएँ:** वे वस्तुएँ जो एक साथ उपयोग की जाती है, पूरक वस्तुएँ कहलाती है। उदाहरण: ब्रेड और मक्खन, पेन और रिफिल।
- **स्थानापन्न वस्तुएँ:** ये वे उत्पाद होते है, जो एक - दूसरे के विकल्प के रूप में काम आते हैं। उदाहरण: चाय और कॉफी।
- **वेबलेन (स्नोब) वस्तुएँ:** ये वे वस्तुएँ है, जिनकी माँग उनकी कीमत बढ़ने के साथ बढ़ती है, क्योंकि लोग इन्हें प्रतिष्ठा का प्रतीक मानते है। उदाहरण: रोलेक्स घड़ी, निजी जेट
- गिफिन **वस्तुएँ:** ये वे वस्तुएँ होती है, जिनकी माँग कीमत बढ़ने के साथ बढ़ती है और कीमत घटने के साथ घटती है। ये सामान्य उपयोग की वस्तुएँ होती है। जैसे- मोटा आटा, आलू आदि।

- **सार्वजनिक वस्तुएँ:** वे वस्तुएँ जो गैर-प्रतिस्पर्धी (एक व्यक्ति के उपभोग से दूसरों के लिए उपलब्धता कम नहीं होती) और गैर-बहिर्गम्य (किसी को भी उपयोग करने से रोका नहीं जाता) होती हैं, सार्वजनिक वस्तुएँ कहलाती है । जब सरकार कोई वस्तु मुफ़्त में उपलब्ध कराती है, तो उनकी अवसर लागत उपभोक्ताओं से करदाताओं पर स्थानांतरित हो जाती है। अर्थात् जब व्यक्तियों को वह वस्तु बिना किसी लागत के या मुफ्त में मिलती है, तो उसकी लागत आम जनता द्वारा करों के माध्यम से वहन की जाती है। उदाहरण: पार्क, रक्षा आदि।
- **निजी वस्तुएँ:** वे वस्तुएँ जो प्रतिस्पर्धी (एक व्यक्ति का उपभोग दूसरों की खपत को सीमित करता है) और बहिर्गम्य (विशिष्ट उपयोगकर्ताओं तक सीमित हो सकती हैं) दोनों होती हैं, निजी वस्तुएँ कहलाती है। उदाहरण: क्लब सदस्यता, घर आदि।
- **मैरिट वस्तुएँ:** जिनका समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जैसे शिक्षा या स्वास्थ्य सेवा आदि।
- **डिमैरिट वस्तुएँ:** जिनका समाज पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उदाहरण: शराब, सिगरेट आदि।

स्टॉक और फ्लो (प्रवाह)

- स्टॉक: वे संपत्ति या वस्तुएँ, जो किसी निश्चित समय पर मौजूद रहती हैं। उदाहरण: पूंजीगत वस्तुएँ (मशीनरी)
- फ्लो: वे मात्राएँ, जो किसी निश्चित अवधि में घटित होती हैं। ये प्रति घंटे, प्रतिदिन या प्रतिमाह बदलते रहने के कारण इनमें गतिशीलता अधिक होती हैं। उदाहरण: पूंजीगत वस्तुओं में समय के साथ होने वाला परिवर्तन।

मांग का नियम

मांग के नियम अनुसार, जब किसी वस्तु या सेवा की कीमत बढ़ती है, तो उपभोक्ताओं द्वारा की जाने वाली मांग कम हो जाती है और कीमत घटती है, तो मांग बढ़ जाती है, बशर्ते अन्य सभी कारक अपरिवर्तित रहते हो। उदाहरण के लिए, यदि स्मार्टफोन की कीमतें गिरती हैं, तो उपभोक्ताओं द्वारा इसे अधिक खरीदने की संभावना बढ़ जाती है। कीमत और मांग के बीच यह व्युत्क्रम संबंध अर्थशास्त्र का एक प्रमुख सिद्धांत है। हालाँकि यह नियम केवल सामान्य वस्तुओं पर ही लागू होता है।

- **मांग वक्र:** मूल्य में परिवर्तन से आम तौर पर मांग की मात्रा में विपरीत परिवर्तन होता है, जिससे मांग वक्र नीचे की ओर झुकता है। कुछ मामलों में, मूल्य में कमी मांग को कम कर सकती है और मूल्य में वृद्धि इसे बढ़ा सकती है, जिससे वक्र ऊपर की ओर झुकता है। 'अनुमानात्मक प्रभाव' (speculative effect) इसे उलट भी सकता है, क्योंकि उपभोक्ता भविष्य में मूल्य वृद्धि की आशंका जताते हैं। आय में परिवर्तन, संबंधित वस्तुओं की कीमतें और प्राथमिकताएँ आदि जैसे कारक मांग वक्र को बदल सकते हैं। इन कारकों में वृद्धि वक्र को दाईं ओर ले जाती है, जबकि कमी इसे बाईं ओर ले जाती है।
- **मांग की लोच:** इसमें इसका मापन किया जाता है कि किसी वस्तु या सेवा की मांग मूल्यों में होने वाले परिवर्तनों के प्रति कितनी संवेदनशील है तथा उपभोक्ता इन मूल्य परिवर्तनों के प्रति कितने संवेदनशील हैं।
- **मांग की लोच के प्रकार**
  - ✓ **पूर्णतः लोचशील:** कीमत में अत्यंत कम बदलाव पर मांग में असीमित बदलाव।
  - ✓ **पूर्णतः अलोचशील:** मूल्य में परिवर्तन के बावजूद मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं।
  - ✓ **अपेक्षाकृत लोचशील:** मूल्य में अल्प परिवर्तन के लिए मात्रा में अधिक परिवर्तन।
  - ✓ **एकात्मक लोच:** मात्रा और मूल्य में आनुपातिक परिवर्तन।
  - ✓ **अपेक्षाकृत अलोचशील:** मूल्य में अधिक परिवर्तन के लिए मात्रा में अल्प परिवर्तन।

आपूर्ति का नियम

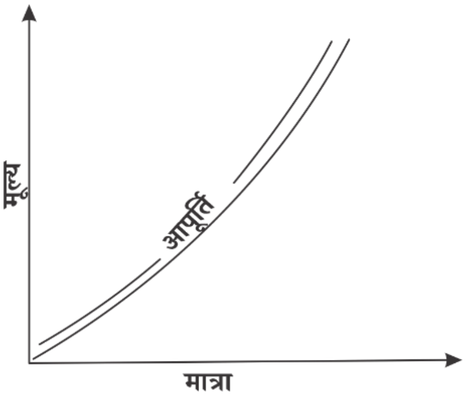

- आपूर्ति का नियम कहता है, कि जैसे-जैसे कीमतें बढ़ती हैं, आपूर्ति की मात्रा भी बढ़ती है और जैसे-जैसे कीमतें गिरती हैं, आपूर्ति की मात्रा भी कम होने लगती है।
- उदाहरण के लिए, कॉफ़ी की ऊंची कीमतें किसानों को अधिक कॉफ़ी उत्पादित करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं, जबकि कम कीमतें कम उत्पादन को प्रेरित करती हैं। यह कीमत और आपूर्ति के बीच सीधे संबंध को दर्शाता है।
- **आपूर्ति की लोच**: इसमें यह मापा जाता हैं कि किसी वस्तु या सेवा की आपूर्ति की मात्रा मूल्य परिवर्तनों को किस प्रकार प्रभावित करती है। इससे यह समझने में मदद मिलती है कि उत्पादक मूल्यों में होने वाले उतार-चढ़ाव के परिणामस्वरूप अपने उत्पादन को कैसे समायोजित करते हैं।
- **आपूर्ति की लोच के प्रकार**
  - ✓ **सापेक्षतः लोचशील आपूर्ति:** मूल्य में परिवर्तन की तुलना में आपूर्ति की मात्रा में अधिक परिवर्तन होता है।
  - ✓ **एकात्मक लोच:** मूल्य में परिवर्तन के अनुरूप ही आपूर्ति की मात्रा बदलती है।
  - ✓ **सापेक्षतः अलोचशील आपूर्ति:** आपूर्ति की मात्रा कीमत के अनुपात से कम बदलती है।

आय और पारस्परिक लोच

- **आय लोच:** यह आय में परिवर्तन के कारण मांग या आपूर्ति की मात्रा की प्रतिक्रिया को मापता है।
- **पारस्परिक लोच:** यह विश्लेषण करता है, कि एक वस्तु की मांग या आपूर्ति की मात्रा दूसरी वस्तु के मूल्य में परिवर्तन के लिए कैसे जिम्मेदार होती है।

आकारिक मितव्ययिता (Economies of scale)

- **परिभाषा:** परिणाममूलक सुलाभ का तात्पर्य यह है, की जब कोई कंपनी उत्पादन में अधिक कुशल हो जाती है, तब उसकी उत्पादन लागत कम तथा उसका लाभ बढ़ जाता है। इसे प्राप्त करने के लिए कम्पनियों को अपना उत्पादन बढ़ाना होता है।
- **उदाहरण:** बड़ी सुपरमार्केट श्रृंखलाएँ अधिक नकदी प्रवाह और अधिक ग्राहक - आधार के कारण पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं से लाभान्वित होती हैं। ये आपूर्तिकर्ताओं से थोक में किराने का सामान खरीदकर लागत कम कर लेते हैं, जिससे उन्हें स्वतंत्र एवं छोटे किराना विक्रेताओं की तुलना में कम कीमतों पर बेचने में मदद मिलती है।

Unleash the topper in you

आर्थिक वृद्धि बनाम आर्थिक विकास

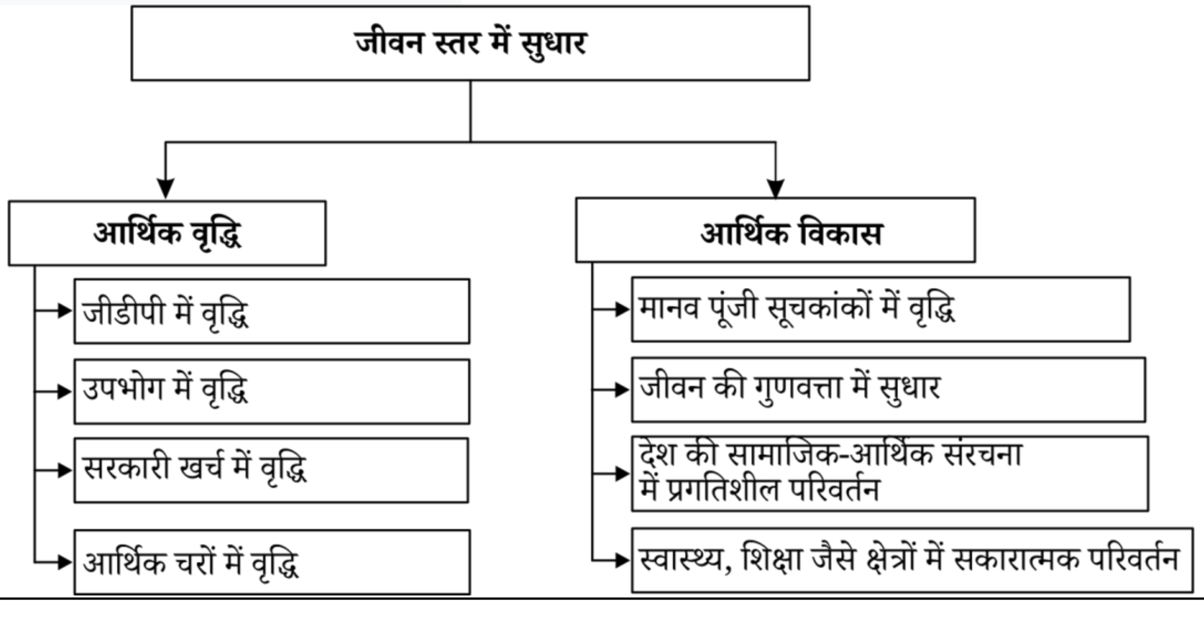

महत्वपूर्ण अर्थशास्त्री और उनकी पुस्तकें

अर्थशास्त्री/लेखक	पुस्तक का नाम	प्रमुख अवधारणा / योगदान
गुन्नार मिर्डल	इकोनॉमिक थ्योरी एंड अंडर-डेवलप्ड रीजन	चक्रीय कार्य – कारण अवधारणा, क्षेत्रीय असमानता
अल्बर्ट ओ. हिर्शमैन	द स्ट्रैटेजी ऑफ इकोनॉमिक डेवलपमेंट	विकास अर्थशास्त्र में असंतुलित विकास रणनीति
निकोलस काल्डोर	स्ट्रैटेजिक फैक्टर्स इन इकोनॉमिक डेवलपमेंट	विनिर्माण का महत्व और बढ़ते हुए लाभ की अवधारणा
एडम स्मिथ	द वेल्थ ऑफ नेशन्स (1776)	शास्त्रीय अर्थशास्त्र; अदृश्य हाथ (Invisible Hand); श्रम विभाजन (Division of Labor)
थॉमस आर. माल्थस	एन एस्से ऑन द प्रिंसिपल ऑफ पॉपुलेशन (1798)	जनसंख्या ज्यामितीय दर से बढ़ती है, खाद्य आपूर्ति अंकगणितीय दर से बढ़ती है

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER

राष्ट्रीय आय की गणना

राष्ट्रीय आय की गणना के माध्यम से किसी देश की समग्र आर्थिक गतिविधियों का मूल्यांकन किया जाता है। इसमें अर्थव्यवस्था के प्रदर्शन, उत्पादन, आय और व्यय का आकलन करने के लिए कई प्रमुख संकेतकों का उपयोग किया जाता है। इन प्रमुख संकेतकों में शामिल हैं: सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी), शुद्ध घरेलू उत्पाद (एनडीपी), सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी), शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (एनएनपी), सकल राष्ट्रीय आय (जीएनआई) और शुद्ध राष्ट्रीय आय (एनएनआई)।

आर्थिक क्षेत्र

- यह किसी देश के शासन के अंतर्गत आने वाले उस क्षेत्र को संदर्भित करता है, जहाँ लोगों, वस्तुओं और पूंजी का स्वतंत्र आवागमन होता हैं।
- इसमें देश की राजनीतिक सीमाओं के साथ-साथ प्रादेशिक जल और हवाई क्षेत्र, विदेशों में स्थित वाणिज्य दूतावास एवं सैन्य अड्डे भी शामिल हैं।
- इसमें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय निवासियों द्वारा संचालित जहाज, विमान और अन्य परिवहन भी शामिल हैं। जैसे- एयर इंडिया की वैश्विक सेवाएँ, मछली पकड़ने के जहाज, तेल – निष्कर्षण वाले प्लेटफार्म और अंतरराष्ट्रीय जल या देश के पास विशेष परिचालन अधिकार वाले क्षेत्रों में संचालित फ़्लोटिंग प्लेटफ़ॉर्म।

सामान्य निवासी एवं भारतीय नागरिक

- **सामान्य निवासी:** वह व्यक्ति जो किसी देश में रहता है और उसके आर्थिक हित भी उसी देश में केंद्रित होते हैं, सामान्य निवासी कहलाता है। इसमें नागरिक (भारतीय नागरिक) एवं विदेशी (भारत में रहने वाले गैर-भारतीय नागरिक) दोनों शामिल होते है।
- **नागरिक:** भारत या विदेशों में रहने वाले भारतीय नागरिक।

सकल घरेलू उत्पाद और राष्ट्रीय आय

- **सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी):** यह किसी देश की सीमाओं के भीतर एक विशिष्ट अवधि (सामान्यतः एक वर्ष) के दौरान उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के कुल बाजार मूल्य को दर्शाता है। इसमें देश के भीतर कार्यरत घरेलू और विदेशी, दोनों कंपनियों के उत्पादन को शामिल किया जाता है।
- **राष्ट्रीय आय (एनआई):** यह देश के नागरिकों द्वारा देश या विदेशों से अर्जित सम्पूर्ण कारक आय का योग है। **उदाहरण:**
  - ✓ यदि कोई जापान की कंपनी भारत में 200 करोड़ रुपये कमाती है, तो वह भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में योगदान देती है, लेकिन राष्ट्रीय आय में नहीं क्योंकि यह आय जापानी इकाई की है।
  - ✓ दूसरी ओर यदि कोई भारतीय कंपनी जापान में 600 करोड़ रुपये कमाती है, तो इसे भारत की राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाएगा, लेकिन सकल घरेलू उत्पाद(GDP) में नहीं, क्योंकि यह उत्पादन भारत के बाहर किया गया है।
- **शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP):** इसकी गणना सकल घरेलू उत्पाद में से मूल्यह्रास (पूंजीगत वस्तुओं की टूट-फूट/घिसावट), को घटाकर की जाती है।
  - ✓ **सूत्र:** NDP = GDP - मूल्यह्रास (depreciation)
  - ✓ उदाहरण: यदि GDP 5000 करोड़ रुपये है और मूल्यह्रास 1,00 करोड़ रुपये है, तो: NDP= 5000−100= 4,900 करोड़ रुपये।

नोट:

- **मूल्यह्रास** का तात्पर्य उपयोग और अप्रचलन के कारण समय के साथ किसी संपत्ति या मशीनरी के मूल्य में होने वाली गिरावट से है।
- **उत्पाद कर:** उत्पाद कर वे कर हैं, जो वस्तुओं व सेवाओं पर सीधे लगाए जाते हैं, ये बाजार मूल्य को बढ़ाते हैं।
- **सब्सिडी:** सब्सिडी एक आर्थिक सहायता हैं, जो सरकार द्वारा वस्तुओं या सेवाओं की लागत को कम करने के लिए दी जाती हैं; यह बाजार मूल्य को घटाती हैं।
- **मध्यवर्ती उपभोग** उन वस्तुओं और सेवाओं को संदर्भित करता है, जो उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान उपभोग की जाती है और दोहरी गणना से बचने के लिए उन्हें जीडीपी में शामिल नहीं किया जाता है।
- **विदेशों से शुद्ध कारक आय (NFIA):** यह विदेशों में भारतीय निवासियों द्वारा अर्जित कारक आय और भारत में गैर-निवासियों द्वारा अर्जित कारक आय के बीच अंतर को दर्शाता है। (NFIA = विदेश से भारत को प्राप्त आय - भारत से विदेश को भेजी गई आय)

आय का चक्रीय प्रवाह

- आय का चक्रीय प्रवाह किसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं, सेवाओं, उत्पादन, आय और व्यय की निरंतर गतिशीलता को दर्शाता है।
- पैसा उत्पादकों से श्रमिकों तक मजदूरी के रूप में जाता है ओर फिर वस्तुओं के भुगतान के रूप में उत्पादकों के पास वापस आ जाता है।
- उत्पादन के कारकों में भूमि, श्रम, पूंजी और उद्यमिता शामिल हैं।
- प्रत्येक कारक के लिए भुगतान इस प्रकार है- किराया (भूमि के लिए), मजदूरी (श्रम के लिए), ब्याज (पूंजी के लिए) और लाभ (उद्यमिता के लिए) हैं।

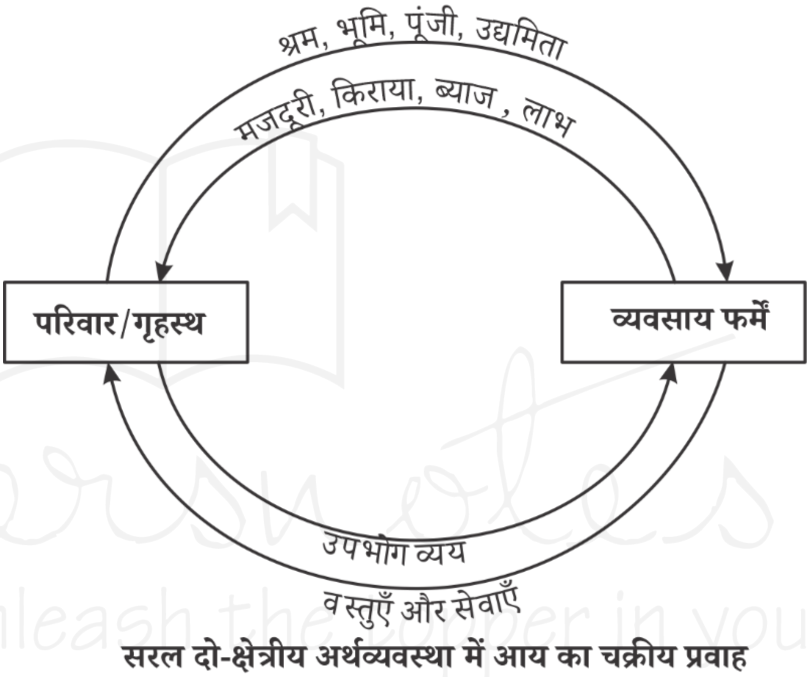

सरल दो-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय का चक्रीय प्रवाह

पूंजी उत्पाद अनुपात(Capital Output Ratio)

- पूंजी उत्पाद अनुपात (COR), उत्पाद की एक इकाई का उत्पादन करने के लिए आवश्यक पूंजी की मात्रा को बताता है। यह निवेश और जीडीपी में इससे होने वाली वृद्धि के बीच संबंध को दर्शाता है, साथ ही उत्पादित उत्पाद के मूल्य की तुलना में निवेशित पूंजी के मूल्य को भी दर्शाता है।

- **निश्चित पूंजी (Fixed capital)** से तात्पर्य इमारतों, मशीनरी और उपकरणों जैसी दीर्घकालिक परिसंपत्तियों से है, जो समय के साथ निरंतर लाभ प्रदान करती हैं और निरंतर संचालन का समर्थन करती हैं। उदाहरण के लिए, किसान का हल या कंप्यूटर निश्चित पूंजी माना जाता है। जबकि,
- **कार्यशील पूंजी (working capital)** दैनिक संचालन के लिए आवश्यक अल्पकालिक वित्तीय संसाधनों से संबंधित है। जैसे कि पेट्रोल और सूत (यार्न), जिनका उपयोग एक ही उत्पादन चक्र के भीतर किया जाता है।

जीडीपी से संबंधित अवधारणाएँ

- **नाममात्र जीडीपी (Nominal GDP):** यह चालू वर्ष में अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन को संदर्भित करता है, जिसका मूल्यांकन उसी वर्ष की प्रचलित (चालू) कीमतों के आधार पर किया जाता है। इसमे कीमतों के संबंध में कोई समायोजन नहीं किया जाता है।
- **वास्तविक जीडीपी (Real GDP):** यह चालू वर्ष में उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं का मूल्य है, लेकिन इसका मूल्यांकन आधार वर्ष (Base Year) की स्थिर कीमतों पर किया जाता है। इससे मुद्रास्फीति के प्रभावों को हटाकर GDP की वास्तविक वृद्धि ज्ञात की जा सकती है।
- **प्रेस्टन वक्र:** यह किसी देश की प्रति व्यक्ति आय (आमतौर पर प्रति व्यक्ति जीडीपी) और उसकी औसत जीवन प्रत्याशा के बीच संबंध को दर्शाता है।
- **जीडीपी डिफ्लेटर:** जीडीपी डिफ्लेटर, जिसे अंतर्निहित मूल्य डिफ्लेटर के रूप में भी जाना जाता है, मुद्रास्फीति का एक माप है। यह किसी विशिष्ट वर्ष में वर्तमान कीमतों पर उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य और आधार वर्ष की कीमतों पर उत्पादित उन्हीं वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य के अनुपात को दर्शाता है।

$$\text{GDP डिफ्लेटर} = \frac{\text{नाममात्र GDP}}{\text{वास्तविक GDP}} \times 100$$

यदि जीडीपी डिफ्लेटर = **1** है, तो मूल्य में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

यदि जीडीपी डिफ्लेटर > **1** है, तो यह मूल्य में वृद्धि को इंगित करता है।

यदि जीडीपी डिफ्लेटर < **1** है, तो यह मूल्य में कमी को इंगित करता है।

जीडीपी गणना की विधियाँ

- **उत्पाद/मूल्य** वर्द्धन **विधि:**
  - ✓ इस विधि में, GDP की गणना प्रत्येक फर्म द्वारा किए गए 'मूल्य वर्द्धन (Value Added) के योग से की जाती है। मूल्य संवर्धन = उत्पादन का कुल मूल्य – मध्यवर्ती वस्तुओं की लागत
  - ✓ **उदाहरण:** एक किसान 100 रुपये का गेहूं उत्पादित करता है और एक बिस्किट निर्माता 50 रुपये के गेहूं का इस्तेमाल करता है। 50 रुपये के इस गेहूँ से 200 रुपये के बिस्किट बनते हैं। अतः किसान द्वारा जोड़ा गया मूल्य 100 रुपये है और बिस्किट निर्माता द्वारा जोड़ा गया मूल्य 150 रुपये (200 रुपये - 50 रुपये) है। इसलिए सकल मूल्य वर्द्धन विधि से जीडीपी = 100 + 150 = 250
  - ✓ {सूत्र: GDP = ∑(सभी फर्मों का कुल मूल्य वर्द्धन)}
- **व्यय विधि (Expenditure method):**
  - ✓ व्यय विधि अर्थव्यवस्था में कुल व्यय को जोड़कर GDP की गणना करती है, जिसमें उपभोग (C) व्यय, निवेश (I), सरकारी व्यय (G) और शुद्ध निर्यात (X - M) शामिल हैं, जहाँ X निर्यात का प्रतिनिधित्व करता है और M आयात का प्रतिनिधित्व करता है।
  - ✓ **उदाहरण:** यदि उपभोक्ता घरेलू वस्तुओं पर 200 रुपये खर्च करते हैं, व्यवसाय में 300 रुपये का निवेश किया जाता हैं, सरकार का खर्च 400 रुपये होता है और निर्यात 200 रुपये का तथा आयात 100 रुपये का है तो: जीडीपी = 200 + 300 + 400 + (200−100) = 1000 रुपये।
  - ✓ {सूत्र: GDP = C + I + G + (X − M)}

- **आय विधि:**
  - ✓ आय विधि में निवासियों और फर्मों द्वारा अर्जित कुल आय को जोड़कर जीडीपी की गणना की जाती है, जिसमें मजदूरी, ब्याज, लाभ और किराया सभी शामिल है।
  - ✓ GDP = ∑(मजदूरी + ब्याज + लाभ + किराया)

मूल्य अवधारणाएँ

- **कारक लागत:** यह उत्पादन लागत है जिसमें कर और सब्सिडी शामिल नहीं है। यह उत्पादकों द्वारा अर्जित आय को दर्शाता है। इसमें मजदूरी, किराया, ब्याज और लाभ शामिल हैं।
- **आधार मूल्य (Basic price):** इसमें कारक लागत के साथ-साथ उत्पादन कर (जैसे- फैक्ट्री पर संपत्ति कर) जोड़े जाते हैं और उत्पादन सब्सिडी (जैसे- सरकार द्वारा फैक्ट्री संचालन हेतु सहायता) घटा दी जाती है।
  - ✓ **उदाहरण:** यदि किसी विनिर्माण इकाई की कारक लागत 100 करोड़ रुपये है, जिस पर 15 करोड़ रुपये उत्पादन कर (production tax) लगाया जाता है और 10 करोड़ रुपये की सब्सिडी दी जाती है, तो आधार मूल्य होगा: 100 +15 − 10 = 105 करोड़ रुपये।
  - ✓ आधार मूल्य = कारक लागत + उत्पादन कर − उत्पादन सब्सिडी
- **बाजार मूल्य (एम.पी.):** इसमें आधार मूल्य में उत्पाद कर (जैसे वैट या बिक्री कर) को जोड़कर और उत्पाद सब्सिडी को घटाकर उपभोक्ताओं द्वारा भुगतान की गई अंतिम कीमत को शामिल करते है। बाजार मूल्य = आधार मूल्य + उत्पाद कर - उत्पाद सब्सिडी
  - ✓ **उदाहरण:** यदि किसी वस्तु का आधार मूल्य 500 रुपये है, जिस पर 50 रुपये का उत्पाद कर और 20 रुपये की उत्पाद सब्सिडी दी जाती है तो: बाजार मूल्य = 500 + 50 - 20 = 530 रुपये।

आय मेट्रिक्स

- सकल राष्ट्रीय उत्पाद (जीएनपी), शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (एनएनपी), राष्ट्रीय आय (एनआई), व्यक्तिगत आय (पीआई) और व्यक्तिगत प्रयोज्य आय (पीडीआई) आदि समष्टि आर्थिक पहचान और अवधारणाएं किसी अर्थव्यवस्था में आय वितरण को समझने के लिए आवश्यक हैं।
- ये मेट्रिक्स मूल्यह्रास, कर, सब्सिडी और हस्तांतरण जैसे कारकों के प्रभाव को भी दर्शाती हैं।

1. **सकल राष्ट्रीय उत्पाद (Gross National Product):** जीएनपी किसी देश के कुल आर्थिक उत्पादन को मापता है। इसमें विदेशों से उत्पादन के घरेलू कारकों द्वारा अर्जित आय को जीडीपी में जोड़ा जाता है एवं देश के भीतर विदेशी कारकों द्वारा अर्जित आय को जीडीपी में से घटाया जाता है। इसकी गणना जीडीपी में विदेशों से प्राप्त शुद्ध कारक आय (NFIA) को जोड़कर की जाती है।
   जीएनपी = जीडीपी + विदेश से शुद्ध कारक आय
2. **शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (Net National Product):** एनएनपी की गणना जीएनपी में से मूल्यह्रास घटाकर की जाती है।
   एनएनपी= जीएनपी - मूल्यह्रास
3. **राष्ट्रीय आय (एनआई):** यह बाजार मूल्यों पर मूल्यांकित एनएनपी(NNP_{MP}) है, जिसे अप्रत्यक्ष करों और सब्सिडी के अनुसार समायोजित किया जाता है। यह देश के भीतर उत्पादन के कारकों द्वारा अर्जित कुल आय को दर्शाता है।
   सूत्र: एनआई = बाजार मूल्यों पर एनएनपी - शुद्ध अप्रत्यक्ष कर (अप्रत्यक्ष कर - सब्सिडी) = कारक लागत पर एनएनपी(NNP_{FC})

4. व्यक्तिगत आय (पीआई): यह राष्ट्रीय आय में परिवारों के हिस्से को दर्शाता है और इसकी गणना राष्ट्रीय आय में से परिवारों के अविभाजित लाभ, कॉर्पोरेट करों और शुद्ध ब्याज भुगतानों को घटाकर एवं सरकार और फर्मों से प्राप्त हस्तांतरण भुगतानों (transfer payments) को जोड़कर की जाती है।

- ✓ **अविभाजित लाभ** फर्मों और सरकारी उद्यमों द्वारा अर्जित लाभ के उस हिस्से को संदर्भित करता है, जिसे उत्पादन के कारकों के बीच वितरित नहीं किया जाता है।
- ✓ परिवारों को सरकार और फर्मों से **हस्तांतरण भुगतान** (जैसे - पुरस्कार, पेंशन) भी मिलते हैं, जिन्हें व्यक्तिगत आय की गणना में जोड़ा जाता है।

सूत्र: पीआई = एनआई - अविभाजित लाभ - परिवारों द्वारा किए गए शुद्ध ब्याज भुगतान - कॉर्पोरेट कर + हस्तांतरण भुगतान

5. व्यक्तिगत प्रयोज्य आय (पीडीआई): यह व्यक्तिगत आय (पीआई) में से व्यक्तिगत करों (जैसे, आयकर) और गैर-कर भुगतानों (जैसे, शुल्क) को घटाने के बाद परिवारों के पास शेष बची आय को संदर्भित करता है। यह आय की उस राशि को दर्शाता है, जिसका उपयोग परिवार अपने उपभोग या बचत के लिए कर सकते हैं।

सूत्र: पीडीआई = पीआई - व्यक्तिगत कर भुगतान - गैर-कर भुगतान

जीवीए(GVA) और जीडीपी (GDP) के बीच अंतर

पक्ष	**सकल मूल्य** वर्द्धन **(GVA)**	**सकल घरेलू उत्पाद (GDP)**
परिभाषा	मध्यवर्ती वस्तुओं और सेवाओं को घटाने के बाद उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य।	देश के भीतर उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का बाज़ार मूल्य।
केन्द्र बिंदु	आपूर्तिकर्ता या इनपुट पक्ष से प्राप्त जानकारी का प्रयोग करता है।	उपभोक्ता या आउटपुट पक्ष से प्राप्त जानकारी का प्रयोग करता है।
गणना पद्धति	आमतौर पर क्षेत्रवार (जैसे कृषि, उद्योग, सेवा) गणना की जाती है।	पूरी अर्थव्यवस्था के लिए एक साथ गणना की जाती है।
गणना का आधार	आधार मूल्य पर गणना की जाती है।	बाज़ार मूल्य पर गणना की जाती है।

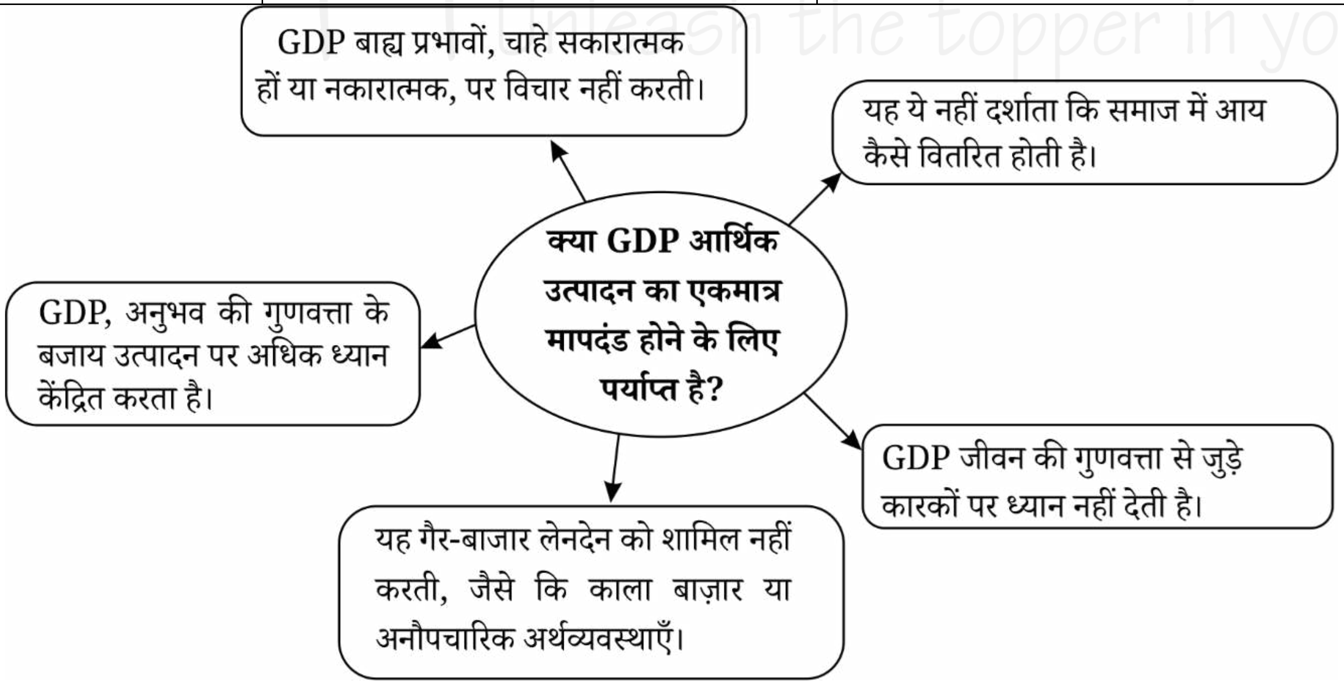

आर्थिक कल्याण मापने के अन्य तरीके

- **हरित जीडीपी:** यह एक आर्थिक माप है जो किसी देश के आर्थिक विकास के पर्यावरणीय प्रभावों को शामिल करता है। इसे देश के शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP) में से पर्यावरणीय क्षति और प्राकृतिक संसाधनों की कमी से जुड़ी लागतों को घटाकर प्राप्त किया जाता है।
- **सकल राष्ट्रीय** प्रसन्नता **(GNH):** यह देश के लोगों के कल्याण को प्राथमिकता देकर किसी देश के विकास का आकलन करने की एक विधि है। यह जीडीपी के पारंपरिक उपाय के विकल्प के रूप में कार्य करता है। इसे सबसे पहले भूटान में अपनाया गया।
- **वास्तविक प्रगति संकेतक (GPI):** इसे आर्थिक विकास को मापने के लिए GDP के विकल्प या पूरक के रूप में प्रस्तावित किया गया है। यह पर्यावरणीय और सामाजिक कारकों पर आर्थिक उत्पादन और खपत के प्रभावों का आकलन करता है। GPI इस बात पर विचार करता है, कि क्या ये कारक समग्र स्वास्थ्य और कल्याण में सकारात्मक या नकारात्मक रूप से योगदान करते हैं।
- **मानव विकास सूचकांक (HDI):** यह मानव विकास के तीन प्रमुख पहलुओं को आधार बनाकर देश के औसत प्रदर्शन का मूल्यांकन करता है। ये पहलू है- स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन स्तर। इसका प्रकाशन UNDP द्वारा किया जाता है।

क्या आप जानते है?

ग्रीनडेक्स नेशनल ज्योग्राफिक और ग्लोबस्कैन द्वारा बनाया गया एक सर्वेक्षण है, जिसका उद्देश्य व्यक्तियों की उपभोक्ता आदतों की पर्यावरणीय स्थिरता का आकलन करना है। यह विभिन्न देशों में औसत उपभोक्ता के पर्यावरणीय प्रभाव का मूल्यांकन करता है, जिसमें व्यक्तिगत विकल्पों और बाहरी कारकों से प्रभावित होने वाले दोनों पहलुओं को ध्यान में रखा जाता है। ग्रीनडेक्स स्थिरता के प्रति समान व्यवहार और दृष्टिकोण के आधार पर देशों की तुलना करता है।

जीडीपी और जीएनपी जैसे संकेतकों के माध्यम से किसी देश के आर्थिक प्रदर्शन को मापने के लिए राष्ट्रीय आय लेखांकन या गणना आवश्यक है। यह आर्थिक विकास, आय वितरण और समाज के कल्याण का आकलन करने में मदद करता है। कुछ सीमाओं के बावजूद यह नीति निर्धारण और आर्थिक विश्लेषण के लिए महत्वपूर्ण कारक बना हुआ है।

Unleash the topper in you

3 CHAPTER

मुद्रा और मुद्रा आपूर्ति

मुद्रा और बैंकिंग प्रणाली में केंद्रीय और वाणिज्यिक बैंक जैसी संस्थाएँ शामिल हैं, जो मुद्रा का प्रबंधन करती हैं, ब्याज दरों को विनियमित करती हैं और ऋण प्रदान करती हैं। ये धन और ऋण के प्रवाह को सुविधाजनक बनाकर आर्थिक स्थिरता, विकास और कुशल संसाधन आवंटन सुनिश्चित करते है।

<u>मुद्रा और उसका विकास</u>

मुद्रा समाज द्वारा विनिमय के माध्यम के रूप में व्यापक रूप से स्वीकार की जाने वाली वस्तु है, जो लेखा-जोखा/लेखांकन की इकाई, मूल्य के भंडारण और ऋण चुकाने के साधन के रूप में कार्य करती है। यह वस्तु विनिमय प्रणाली के एक कुशल विकल्प के रूप में उभरी है, जहाँ वस्तुओं और सेवाओं का बिना किसी मौद्रिक माध्यम के सीधे आदान-प्रदान किया जाता था। वस्तु विनिमय प्रणाली की कई चुनौतियाँ थी। जैसे कि "आवश्यकताओं का दोहरा संयोग" (दोनों पक्षों को वही वस्तु चाहिए, जो वे एक- दूसरे को पेश कर रहे है) और मूल्य की हानि के बिना वस्तुओं को संग्रहीत करने में कठिनाई आदि। इन चुनौतियों ने मुद्रा को विनिमय के एक सामान्य और आसानी से हस्तांतरणीय माध्यम के रूप में विकसित किया।

<u>मुद्रा के कार्य</u>

- विनिमय का माध्यम: मुद्रा आवश्यकताओं के दोहरे संयोग को समाप्त करती है, जिससे आर्थिक लेन-देन सुचारू रूप में संभव होता है।
- लेखा इकाई: यह वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को मानकीकृत करती है जिससे मूल्य के आधार पर उनकी तुलना आसान हो जाती है।
- मूल्य का भंडारण: यह धन को सुरक्षित रखती है तथा खर्च और बचत के लिए तरलता प्रदान करती है।
- स्थगित भुगतान का मानक: मुद्रा भविष्य के लेन-देन में भुगतान की सुविधा प्रदान करती है।
- भुगतान का साधन: मुद्रा ऋण, कर और दायित्वों का निपटान करती है।

वैध मुद्राएँ (Legal Tenders)

मुद्राएँ और सिक्के वैध मुद्रा कहलाते हैं, क्योंकि इन्हें किसी भी नागरिक द्वारा किसी भी प्रकार के लेन-देन के निपटारे के लिए अस्वीकार नहीं किया जा सकता।

चेक, (बचत या चालू खाते से जारी)को, भुगतान के एक माध्यम के रूप में कोई भी व्यक्ति अस्वीकार कर सकता है। इसलिए, चेक वैध मुद्रा नहीं होते।

चेक को प्रत्ययी धन कहा जाता है, क्योंकि इन्हें भुगतान के माध्यम के रूप में भुगतानकर्ता और प्राप्तकर्ता के बीच विश्वास भरोसे के आधार पर स्वीकार किया जाता है, न कि सरकार के किसी आदेश के आधार पर।

मुद्रा के प्रकार

- ✓ **वस्तु/कमोडिटी मुद्रा:** यह आंतरिक मूल्य वाली मुद्रा होती है। जैसे सोना या चांदी, जिसका मूल्य किसी भी सरकार से स्वतंत्र होता है।
- ✓ **कागज़ी मुद्रा:** यह सरकार या केंद्रीय बैंक द्वारा जारी किए गए करेंसी नोट होते है, जो मौद्रिक मूल्य दर्शाते हैं।
- ✓ **धातु मुद्रा:** सोने और चांदी जैसी कीमती धातुओं से बनी मुद्रा जोसुवाह्यता (पोर्टेबिलिटी), उच्च घनत्व और सुविधा के दृष्टिकोण से मूल्यवान होती है।
- ✓ **बैंक मुद्रा:** वाणिज्यिक बैंकों में मांग जमा के रूप में रखी गई मुद्रा, जिसे चेक के माध्यम से आहरित किया जा सकता है। इसे निकर मनी भी कहा जाता है।
- ✓ **फ़िएट मुद्रा:** सरकार द्वारा जारी की गई मुद्रा, जो किसी भौतिक वस्तु से मुल्यग्रहण नही करती तथा जारी करने वाले प्राधिकरण की गारंटी पर सुरक्षा प्राप्त करती है। जैसे- भारत में करेंसी नोट और सिक्के।
- ✓ **प्लास्टिक मुद्रा:** डेबिट, क्रेडिट या कैश कार्ड जैसे भौतिक कार्ड के रूप प्रचलित मुद्राएँ, जिनका उपयोग नकद लेनदेन के स्थान पर किया जाता है।
- ✓ **हेलीकॉप्टर मनी:** यह व्यय में वृद्धि करने या कर कटौती के माध्यम से अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए मुद्रा छापने और वितरित करने की नीति से संबद्ध है।
- ✓ **बिटकॉइन:** 2009 में शुरू की गई बिटकॉइन एक डिजिटल मुद्रा है, जो केंद्रीय प्राधिकरण की आवश्यकता के बिना तत्काल भुगतान की अनुमति देती है। यह एक ओपन-सोर्स प्रोटोकॉल पर आधारित है और उपयोगकर्ता माइनिंग, विनिमय या पीयर-टू-पीयर लेनदेन के माध्यम से बिटकॉइन प्राप्त कर सकते हैं।
- ✓ **नॉन-फंजिबल टोकन (NFT):** NFT वे अद्वितीय डिजिटल संपत्ति हैं, जिनका उपयोग कला या अचल संपत्ति जैसी वस्तुओं के स्वामित्व को सत्यापित करने के लिए किया जाता है और अलग-अलग मूल्यों के कारण उन्हें विभाजित या इनका एक-दूसरे के साथ विनिमय नहीं किया जा सकता है।
- ✓ **केंद्रीय बैंक डिजिटल करेंसी (CBDC):** यह एक डिजिटल वैध मुद्रा है, जिसे केंद्रीय बैंक द्वारा जारी किया जाता है, जिसकी स्थिरता केंद्रीय बैंक के समर्थन पर आधारित होती है। क्रिप्टोकरेंसी के विपरीत इसे फिएट मनी माना जाता है और यह विनिमय योग्य भी है। RBI गवर्नर ने हाल ही में भारत के ई-रुपी की विशिष्टताओं पर प्रकाश डाला।

डिजिटल मुद्रा	क्रिप्टोकरेंसी
➢ ये सामान्यतः केंद्रीय बैंक द्वारा समर्थित होती है, (जैसे भारत में RBI ने इसे शुरू किया है)। ➢ ये केंद्रीकृत होती है। ➢ ये पारदर्शी होती है किन्तु क्रिप्टोकरेंसी जितनी नही , लेकिन उतनी नहीं जितनी क्रिप्टोकरेंसी होती है, क्योंकि केवल भेजने वाला, प्राप्त करने वाला और बैंकिंग प्राधिकरण ही लेन-देन की जानकारी रखते हैं।	➢ ये केंद्रीय बैंक द्वारा समर्थित नहीं होती (उदाहरण: RBI इसका समर्थन नहीं करता)। ➢ ये विकेन्द्रीकृत होती है। ➢ इनमे पारदर्शिता होती है , क्योंकि यह वितरित खाता-बही प्रणाली (Distributed Ledger System) पर आधारित है तथा क्रिप्टोकरेंसी से संबंधित प्रत्येक जानकारी सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध होती है।

मुद्रा की मांग और आपूर्ति

1. **मुद्रा की मांग:**
   - ✓ **लेन-देन का उद्देश्य:** मुद्रा रखने का एक उद्देश्य आय और व्यय के समय में अंतराल होने पर लेन – देन करना है। यह वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (GDP) और मूल्य स्तर के प्रत्यक्ष समानुपातिक होता है।

✓ **आपातकालीन नकद की पूर्ति का उद्देश्य:** यह बीमारी, दुर्घटना आदि जैसी कुछ आकस्मिक आवश्यकताओं के लिए लोगों की नकदी भंडार रखने की इच्छा को पूर्ण करता है। व्यक्ति की आय जितनी अधिक होगी, इस उद्देश्य के लिए रखी जाने वाली मुद्रा की मात्रा भी उतनी ही अधिक होगी।

✓ **सट्टा/काल्पनिक उद्देश्य :** सट्टे में भविष्य में संपत्ति के मूल्यों का अनुमान लगाना शामिल है। अगर लोगों को संपत्ति की कीमतों में वृद्धि की उम्मीद है, तो वे भविष्य में लाभ कमाने के लिए उनमें निवेश करते हैं और अगर उन्हें कीमतों में गिरावट की आशंका है, तो वे नुकसान से बचने के लिए संपदा/संपत्ति को पैसे में बदल देते हैं। यह बाजार की ब्याज दरों से व्युत्क्रम संबंध को दर्शाता है ।

तरलता जाल (Liquidity Trap): यह वह स्थिति है जब ब्याज दरें अत्यंत निम्न होने पर लोग अर्थव्यवस्था की अनिश्चितता के कारण निवेश करने की बजाय नकद या उसके समकक्ष धन रखना पसंद करते हैं।

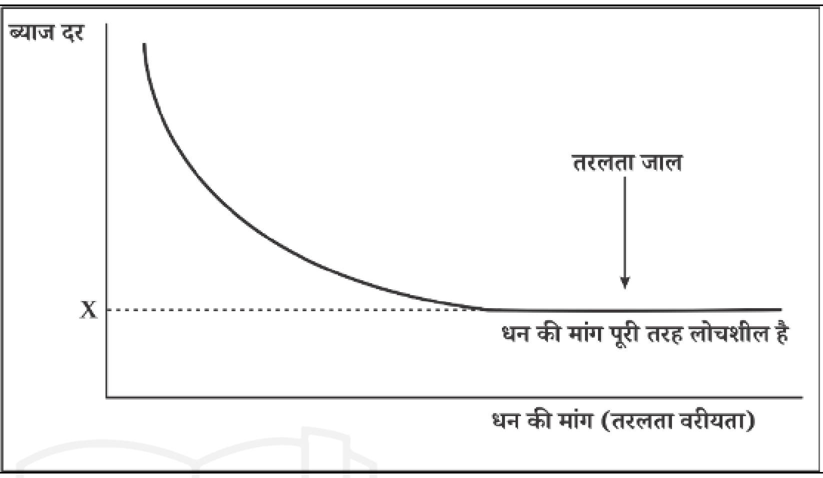

2. बॉन्ड बाजार की गतिशीलता और सट्टा धन प्रवाह (speculative demand):

मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि से बॉन्ड की खरीद बढ़ जाती है, जिससे बॉन्ड की कीमतें बढ़ जाती हैं और बॉन्ड यील्ड/प्रतिफल कम हो जाता हैं। जैसे-जैसे ब्याज दरें कम होती हैं, लोग पूंजी हानि की आशंका के कारण नकद मुद्रा की मांग करने लगते है जिससे सट्टा धन प्रवाह (ब्याज दरों में उत्तार – चढ़ाव से होने वाली हानि से बचने के लिए नकद को वरीयता) बढ़ जाता है। इसके विपरीत, जब ब्याज दरें अधिक होती हैं, तो लोग पैसे को बॉन्ड में बदल देते हैं, जिससे पैसे की सट्टा धन प्रवाह कम हो जाता है।

3. बॉन्ड प्रतिफल (Yield) और ब्याज दरों के बीच संबंध:

जब अर्थव्यवस्था में ब्याज दरें कम होती हैं, तो निश्चित ब्याज दरों वाले बॉन्ड अधिक आकर्षक हो जाते हैं, जिससे इनकी मांग और बाजार मूल्य दोनों बढ़ जाते है। इसके विपरीत जब ब्याज दरें बढ़ती हैं, तो बॉन्ड की कम हो जाती हैं। बॉन्ड प्रतिफल की गणना वार्षिक ब्याज को वर्तमान मूल्य से विभाजित करके की जाती है। इसलिए जब बॉन्ड की कीमतें गिरती हैं, तो बॉन्ड प्रतिफल बढ़ता है और जब कीमतें बढ़ती हैं, तो बॉन्ड प्रतिफल घटता है।

4. मुद्रा आपूर्ति:

✓ मुद्रा आपूर्ति वह कुल राशि है जो किसी निश्चित समय में आम जनता के बीच प्रचलन में रहती है। इसमें सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) के पास सीआरआर के रूप में रखी गई राशि और वाणिज्यिक बैंकों द्वारा एसएलआर के रूप में रखी गई राशि शामिल नहीं होती।

✓ मुद्रा आपूर्ति में शामिल हैं: करेंसी नोट और सिक्के, माँग जमा (जैसे: बचत खाते), सावधि जमा (जैसे: FD), पोस्ट ऑफिस बचत खातों की जमा, अंतर-बैंक जमा (सीआरआर को छोड़कर) आदि।

✓ **मुद्रा आपूर्ति के मापक (Measures of Money Supply):**

- भारतीय रिजर्व बैंक ने मुद्रा आपूर्ति को मापने के लिए कई समुच्चय मानक निर्धारित किए हैं:
  - ☞ **M0 (आरक्षित धन)** में प्रचलन में मुद्रा, RBI के पास बैंकों की जमाराशि और RBI के पास अन्य जमाराशि को शामिल किया जाता हैं।

☞ **M1 (संकीर्ण मुद्रा/नैरो मनी)** जनता के पास रखी गई मुद्रा और वाणिज्यिक बैंकों द्वारा रखी गई शुद्ध मांग जमाराशि का योग है।

☞ **M2** में M1 के साथ डाकघर बचत बैंकों के पास रखी बचत जमाराशि को शामिल किया जाता है।

☞ **M3 (व्यापक मुद्रा/ब्रॉड मनी)** में M1 के साथ बैंकिंग प्रणाली के पास मौजूद शुद्ध सावधि जमाराशि (Time Deposits) को शामिल करते है।

☞ **M4** में M3 के साथ डाकघर बचत संगठनों (राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्रों को छोड़कर) के पास रखी कुल जमाराशि को शामिल कर लिया जाता है।

मुद्रा आपूर्ति के मापक		
सबसे अधिक तरल **(संकीर्ण मुद्रा)**	M1 1. मुद्रा नोट 2. सिक्के 3. बैंक में मांग जमा (बचत, चालू)	M2 M1 + डाकघर बचत जमा
कम तरल **(व्यापक मुद्रा)**	M3 M2 + बैंकों में एक वर्ष तक की सावधि जमा +बैंकों द्वारा कॉल/टर्म उधारी	M4 M3 + बैंकों में एक वर्ष से अधिक की सावधि जमा + NBFC में जमा

✓ भारत में, M0, M1 और M3 का सबसे अधिक उपयोग किया जाता है। RBI NM0, NM1, NM2 और NM3 जैसे नए मौद्रिक समुच्चयों पर भी नज़र रखता है, जो बैंकिंग क्षेत्र की बैलेंस शीट और तरलता पर केंद्रित होते हैं, जैसे:

- **NM0 -** यह प्रचलन में मुद्रा, RBI के पास बैंकों की जमाराशि और RBI के पास अन्य जमाराशि का योग है, जिसमें मुख्य रूप से अर्द्ध -सरकारी संस्थानों, विदेशी केंद्रीय बैंकों और IMF जैसी अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों की जमाराशि भी शामिल है।
- **NM1 (**संकीर्ण मुद्रा**)** में जनता के पास मौजूद मुद्रा, बैंकों के पास चालू जमाराशि (current deposits), बचत जमाराशि का मांग देयता हिस्सा (liabilities portion) और RBI के पास अन्य जमाराशि शामिल हैं। यह बैंकिंग क्षेत्र में मुद्रा और ब्याज रहित जमाराशि (non-interest deposits) का प्रतिनिधित्व करता है।
- **NM2** में NM1 के साथ अल्पकालिक सावधि जमाराशि (short term time deposits) को शामिल करते है, जिसकी परिपक्वता एक वर्ष तक की होती हो।
- **NM3 (**व्यापक मुद्रा**)** में NM2, दीर्घकालिक सावधि जमाराशि और वित्तीय संस्थानों से कॉल/टर्म फंडिंग शामिल है, जो बैंकिंग क्षेत्र की संपूर्ण बैलेंस शीट को शामिल करता है।

✓ कार्य समूह ने नए मौद्रिक समुच्चयों के साथ-साथ तीन तरलता समुच्चयों - एल1, एल2 और एल3 - के निर्माण का भी सुझाव दिया जो इस प्रकार है-

- L1, NM3 और डाकघर बचत बैंकों (राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्रों को छोड़कर) की सभी जमाओं का योग है।
- L2 में L1, सावधि जमा (term deposits), सावधि उधार और वित्तीय संस्थानों से जमा प्रमाणपत्र शामिल हैं।
- L3, L2 और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (NBFC) के पास रखी जनता की जमाओं का योग है।

5. मुद्रा आपूर्ति के निर्धारक:

✓ अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति कई कारकों द्वारा निर्धारित की जाती है। जैसे:

1. **केंद्रीय बैंक नीति:**
   - **खुला बाजार संचालन (Open Market Operations):** इसमें मुद्रा आपूर्ति का प्रबंधन करने के लिए सरकारी प्रतिभूतियों को खरीदना या बेचना शामिल है।
   - **आरक्षित आवश्यकताएँ:** बैंकों को अपनी जमाराशि का एक निश्चित प्रतिशत आरक्षित रखना होता है, जो उनकी उधार देने की क्षमता को प्रभावित करता है।
2. **वाणिज्यिक बैंक क्रियाएँ**
   - **ऋण देने की नीतियाँ:** बैंक व्यक्तियों और व्यवसायों को कितना ऋण देना है, यह तय करके मुद्रा आपूर्ति को प्रभावित करते हैं।
3. **सार्वजनिक प्राथमिकताएँ**
   - **मुद्रा अपने पास रखना (Holding Money):** जनता द्वारा अपने पास नकद या कैश बनाये रखने या ब्याज वाले खातों में जमा करने की आदतें मुद्रा की आपूर्ति को प्रभावित करती है।
4. **आर्थिक गतिविधि**
   - **मुद्रा की गति (Velocity of Money):** जिस दर से अर्थव्यवस्था में धन प्रसारित होता है, उसी अनुरूप आर्थिक गतिविधियाँ भी प्रभावित होती है।
5. **सरकारी प्रभाव**
   - **सरकारी व्यय:** राजकोषीय नीतियाँ और सरकारी व्यय (विशेषतः जब उधार लेकर खर्च किया गया हो) भी मुद्रा आपूर्ति को प्रभावित कर सकते हैं।
6. **वित्तीय नवाचार**
   - **नए वित्तीय उत्पाद:** नए वित्तीय साधनों की शुरूआत मुद्रा आपूर्ति के आकार और संरचना को बदल सकती है।
7. **अर्थव्यवस्था पर मुद्रा आपूर्ति का प्रभाव**
   - मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि से ब्याज दरें कम होती हैं।
   - उपभोक्ताओं के पास अधिक पैसा आने से व्यय बढ़ता है जिससे माँग बढ़ती है।
   - माँग बढ़ने से व्यवसाय अधिक कच्चा माल खरीदते हैं, जिससे उत्पादन बढ़ता हैं।
   - उच्च व्यावसायिक गतिविधियां श्रम की मांग को बढ़ाती है।
   - मुद्रा आपूर्ति में गिरावट का विपरीत प्रभाव पड़ता है।
   - मुद्रा आपूर्ति में परिवर्तन से वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य और मुद्रास्फीति प्रभावित होती है।
   - मुद्रास्फीति और ब्याज दरों पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव देखे जाते हैं।
8. **मुद्रा गुणक (Money Multiplier):**
   - यह बैंकों द्वारा अपने पास रखे गए रिजर्व या आधार मुद्रा (base money) के प्रत्येक रुपये से बनाए जाने वाली व्यापक मुद्रा की मात्रा को संदर्भित करता है।
   - रिजर्व वे जमा राशियाँ हैं जिन्हें बैंक RBI के पास रखते है और उधार नहीं दे सकते।
   - यह अवधारणा मौद्रिक आधार और मुद्रा आपूर्ति के बीच संबंधों को दर्शाती है। यह बताता है कि बैंकों द्वारा दिए जाने वाले ऋण के माध्यम से मुद्रा आपूर्ति कितनी तेज़ी से बढ़ती है।
   - मुद्रा गुणक यह दर्शाता है, कि अर्थव्यवस्था में प्रसारित होने और अन्य बैंकों में पुनः जमा किए जाने की अवधि में प्रारंभिक ऋण कितनी बार "गुणा" होगा।
   - इसकी गणना मुद्रा गुणक = $1/r$ (जहाँ r रिजर्व अनुपात है) या M3 से M0 (M3/M0) के अनुपात के रूप में की जाती है।

मुद्रा आर्थिक लेन-देन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और इसकी प्रभावी आपूर्ति का प्रबंधन, जिसे केंद्रीय बैंक और जनता की पसंद दोनों प्रभावित करते हैं, यह मुद्रास्फीति, ब्याज दरों और आर्थिक विकास को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।